घबरा उठे और धराधर (शेष) के मस्तक तापसे जल उठे ॥ ३ ॥ इस लिये आकुल व्याकुल होकर अंगनमें फिर नहीं सकते, सो दोनोंकी स्त्रियां विचार करनेलगीं कि, पतिको आराम क्यौं कर मिलै अतः शची तो अपने हाथोंसे शक्रकी आंखें मूंदने लगी और नागिन शेषनागके सिरोंपर जलके घड़े डालने लगी ॥ ४ ॥

छप्पय (१८४)

मालपुरो बाळियो,
उमँग उडियो दावानळ ॥
पड़े दिली ऊपरा,
थयो जमुना ऊन्हो जळ ॥
जमना जा गँग मिली,
गंग जा मिली समंदां ॥
आभा भरिया इंद,
साष पूरी रव चंदां ॥
कलमपत माण हीणा किया,
बब्बर अकबर दब्बिया ॥
चीतोड़ नाथ बैकुंठपर,
सुण जगतेस गरब्बिया ॥

टीका—महाराणाने मालपुराको जलाया जिसका अग्नि-कण उड़ कर दिल्लीपर पड़ा जिससे यमुनाका जल उष्ण होगया, यमुना गंगामें जाकर मिली और गंगा जाकर समुद्रमें मिली जहांसे इन्द्रने बद्दल भरे, जिसकी सूर्य और चन्द्रने साक्षी दी, इस तरह यवनपतिको मानहीन किया सो सुनकर बाबर और अकबर लज्जित हुए, और चित्तोड़के पति जगत्सिंहको अपने पुत्रका ऐसा बल सुनकर वैकुंठमें घमंड हुआ॥

सौराष्ट्री दोहा (१८५)

मालपुरारो माल, कैलंपुरै घर घर कियो।
सबल़ दिलीरो साल, राणो ऊभो राजसी॥

टीका-१ महाराणाने मालपुराका माल घर घरका करदिया वह दिल्लीका सबल दुश्मन महाराणा राजसिंह खड़ाहै।

छप्पय (१८६)

अजे सूर झल़हलै,
अजे प्राजल़ै हुतासण॥
अजे गंग षल़हलै,
अजे साबत इंद्रासण॥

अजे धरणि ब्रहमंड,
अजे फल़ फूल धरत्ती ॥
अजे नाथ गोरक्ख,
अजे अह मात सकत्ती ॥
आजू हीलोहल़ धू अटल़,
बेद धरम बाणारसी ॥
पतसाह हूंत चीतोड़पत,
राण मिलै किम राजसी ॥

टीका-अद्यावधि सूर्य तेजमय है, अभीतक अग्निमें दाहशक्ति है, अभीतक गंगा वह रही है, इन्द्रका आसन अभी तक ज्यौंका त्यौं है, पृथ्वी और ब्रह्माण्ड अभीतक अपनी हद पर हैं, फल फूल अभीतक पृथ्वीपर पूर्वभावसेही वर्तमान हैं, अभीतक गोरखनाथ विद्यमान हैं और योगमाया ने अभी तक अपनी शक्ति धारण कर रक्खी है, समुद्र अभीतक निज मर्याद पर अटल बना हुआ है और काशी भी यथावत् वर्तमान है, फिर चित्तोड़का महाराणा राजसिंह बादशाहसे क्यौं कर मिलेगा ॥

[नोट-'वंशभास्कर' के कर्ता महाकवि सूर्यमल्ल लिखते हैं कि उपरोक्त छन्द जिलिया चारणवासके एक कम्मा नामक नाईने महाराणा राजसिंहजीको बादशाहसे मिलनेके लिये

महाराणा यशप्रकाशके छपनेके अनन्तर कमाजीनामक नाईका कहा हुआ एक गीत प्राप्त हुआ वह यह है—

गीत।

धरा वेध षत्र षेद चत्रकोटगढ ढेलड़ी,
पूरबा नषत्र सुबषत प्रमाणो।
साह अवरंग अवतार सिसपालरो,
राजसी किसन अवतार राणो ॥ १ ॥

मांडियो ज्याग कमधां घरे माढहो,
लिषत•बर सुबर ईसवर लिषायो।
कथन सुण द्वारकाहूंत आयो किसन,
उदैपुरहूंत इम राण आयो ॥ २ ॥

घुरत सद नगारां सझे हिक साथ घण,
सेहरो बांधि बे बर सनेही।
चाव करि कुनणपुर अेम चँवरी चढे,
जगारो किसनगढ जोध जेही ॥ ३ ॥

अेक अधकार हींदू तुरक ईषतां,
जकी तो बात संसार जाणी।

किसन धरि रुकमणी ले गयो कँवारी,
अमररै कळोधर पराणि आणी ॥ ४ ॥

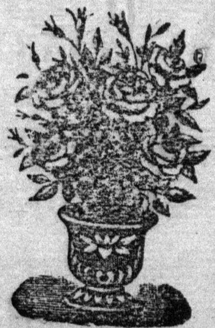
धरा धक धूण गढ कोट चाढे धकै,
देस रावणतणै दिये खगदाह ।
पैलकै गयो सिसपाल माथो पटकि,
पटकि सिर हमरकै गयो पतसाह ॥५॥

राजरा बिरद बाषाण गुण रायवर,
कथन सुणि दिलीचे बीच कहसी ।
राजसी राण हिंदँवाण ध्रम राषतां,
राण बाषाण जुग च्यार रहसी ॥ ६ ॥

[नोट–किशनगढकी किसी राजकुमारीका विवाह वहांके महाराजके विचारसे बादशाह औरंगजेबके साथ स्थिर हो चुकाथा उस समय राजकन्याने यवनके साथ अपना पाणिग्रहण होना नितान्त अनुचित जानकर गुप्तरूपसे महाराणा श्रीराजसिंहजीके पास निजको व्याह लेनेका संदेशा भेजा जिसपर महाराणा साहब किशनगढ आ राज-कन्याको विवाह कर लेगये उसही वृत्तान्तका यह गीत है ।]

टीका—पूर्वानक्षत्रयुक्त अच्छे समयपर धराका वेध करने तथा क्षत्रियोंको खेद पहुंचानेके लिये चित्तौड़गढ़ और दिल्लीसे दो वर आये जिनमें बादशाह औरंगजेब तो शिशुपालका अवतार है और महाराणा राजसिंह कृष्णका अवतार है ॥ १ ॥ आज राठौडोंके घर माढहा बनाहै, यज्ञ मंडा है परन्तु ईश्वरने राजकुमारीके भाग्यमें उत्तम वर लिखाहै इस लिये जैसे रुक्मिणीका संदेश सुनकर द्वारकासे कृष्ण आये ऐसेही उदयपुरसे महाराणा राजसिंह आया ॥ २ ॥ नगारोंका नाद हो रहा है सेहरा बांधकर दो वर एक साथ तैयार हुए और कुनणपुरकी भांति किशनगढमें महाराणा जगत्‌सिंहका पुत्र और बादशाह उत्साहपूर्वक चुंवरी (विवाह मण्डप) पर चढे ॥३॥ हिन्दू और मुसलमानोंका समान अधिकार देखते हुए सब संसार इस बातको जान गया कि कृष्ण तो रुक्मिणीको कुमारी अर्थात् अविवाहिताको ही हरण कर लेगये परन्तु महाराणा अमरसिंहजीकी कलाको धारण करनेवाला महाराणा राजसिंह विवाह करके राजपुत्रीको लाया ॥ ४ ॥ सन्मुख आयेहुए बादशाही गढ तथा कोटोंसहित पृथ्वीको कम्पायमान करदी और रावणरूपी बादशाहके देशको खड्गरूपी अग्निसे दग्ध करदिया। जिस प्रकार पहले शिशुपाल माथा पटककर चला गया वैसेही इस समय अनेक प्रकारसे हतोत्साह होकर शिर धुणता हुआ बादशाह भी चला गया ॥५॥

राजसिंहके विरुद् (स्तुति) व गुणोंका वर्णन तथा बादशा-हका वृत्तान्त सुनकर लोग दिल्लीके बीचमें कहेंगे कि हे राणा राजसिंह हिन्दुओंके धर्मकी रक्षा करनेपर चारों युगोंमें राणा-ओंका यश स्थायी रहेगा ॥ ६ ॥



दिल्ली जाते समय मार्गमें सुनाया था, सो यह छन्द सुनतेही वे वापस उदयपुर लौट आये इससे यह नहीं समझना चाहिये कि महाराणा राजसिंहजी बादशाहसे मिलनेको दिल्ली जाते थे क्योंकि महाराणा राजसिंहजीने कभी ऐसा इरादा किया ही नहीं यह बात इतिहासोंसे सिद्ध है परन्तु जैसे उनकी प्रशंसामें आर लोग काव्य रचा करते थे वैसे ही इस नाईने भी यह छप्पय उक्त महाराणाके लिये बनाकर उनको सुनाया यह नाई जिलिया चारणवासका रहनेवाला था कि जो मारवाड़में कुचामणसे तीन कोश उत्तरमें 'रत्नू' शाखाके चारणोंका गाम है॥

दोहा(१८७)

ओड़ा रतन संहारिया, राजड़ आसकरन्न॥
वो हिंदवाणी बादसा, वो बादसा बरन्न॥

[**नोट**–सुना जाता है कि यह दोहा उस समयका है जब कि ओड़ा ग्राममें महाराणा राजसिंह और उनके सच्चे स्नेही 'दधिवाड़िया' शाखाके चारण आसकरनजी खिचड़ीमें विष देकर मारे गये थे]

टीका–'ओड़ां' में दो रत्न मारे गये जिनमें एक तो राणा राजसिंह थे और दूसरा आसकरन था जिनमें राजसिंह तो हिन्दूपति बादशाह था और आसकरन चारणवर्णका बादशाह था॥

टाडराजस्थानसे उद्धृत ।

मजमून खत महाराणा राजसिंह बनाब साहब शाहनशाह औरंगजेब आलमगीर गाजी–

बोद हमदे एजिद जुलजलाल और शुकरिया करम व फज्ल हुजूरे अनवरके×वाजे हो कि अगरचे ख़ैर तलब खि़दमत हुजूरे आलासे अलाहिदा होगया है । मगर इताअत और ख़ैरख्वाहकिं हर एक लाजमी खि़दमतके अंजामदेहीमें हमातन सरगरम है। मेरी दिली खुवाहिश और शैबानारोजी× कोशिस इसमें है के शाहान व उमराव मिरजायान व राजगान मुमालिक हिन्दोस्तान और फरमांरवायान ईरान व तूरान व रूम व श्याम व बाशंदगाने हफत अक्लीम× और सैइयाहान व हर वबरकी× आफियत व बहबूदीमें तरक्की हो· चुनाचे मेरा यह शोक मशहूर व मारूफ है कि हुजूरके दामन दिलको भी उसमें मुकामें ईसतबाह नहीं होसक्ता इस वास्ते अपने रूसूख खिदमाते साबिका और हुजूरके इंल्तफात पर ऐतबार करके मैं हुजूरसे ऐसे मामले पर मुतवज्जह

(१) तारीफ खुदा बडा जो बुजुर्ग है और सुकरिया बादशाह जो बखाशिश मेहरबानी करनेवाला× (२) रातदिनकी कोशिस× (३) सातों विलायत×(४)सफर करनेवाले मुल्क दर मुल्क फिरने वाले दरया और खुसकीके×(५) कोई शक व सुबहा (६) रसाई (७) मेहरबानी ।

होनेकी इल्तजा करता हूं जिसमें जाते खास व अवामुन्न नासके फवाइद मुजमिर हैं×–

मुझको दरयाफ्त हुआ है के इस खैरख्वाहके खिलाफ जो तदबीरें हुई हैं उनकी तामील व अंजामदेहीमें जर कसीर खर्च हुआ है। और खजाना आमिरेशाहीमें जो कमी आयद हुई उसके रफा करनेके वास्ते हुजूरने खिराज वसूल करनेका हुकुम दिया है। वाजेह राये आलिये हुजूर हो कि आपके अजीमु उशान बुजुर्ग मोहम्मद जलालुद्दीन अकबर खैलद अल्लाह मुलकहूने× अरसे ५२ बावन वर्ष तक कारोबार सलतनतको बडे इसतकलाल और इन्साफसे अंजाम दिया था, और हर फिरका रिआयाके आराम व आसाइशमें कोशिस की थी, खुवाह कोई ईसाई हो या मूसाई या दाऊदी या मोहम्मदी या ब्राह्मण हो या उन दहरियोंके फिरकेसे हो जो दवामियत मादेसे मुनकिर हैं× या उससे जो वजूदे आलमको मुनहसर बेइत्तफाक समझते हैं, उनकी सब पर यकसां तवज्जह व मेहरबानी थी कि इस बिला इमतयाज शफाकतके शुकरिमें उनकी रिआयाने उनको जगतगुरु यानी मुहाफिजनो एवशरके× लकबसे मुमताज किया था।

(१) अर्ज (२) जिसमें आपके और तमाम दुनियाके फायदे शामिल हैं×(३) हमेशा बादशाही करो× (४) पदार्थोंको हमेशा नहीं मानते जगतको अपने आप पैदा होना समझते हैं× (५) हिफाजत करनेवाला बडा समझा गया×।

हजरत मोहम्मद नूरू उद्दीन जहांगीरने कि खुदा उनको भी बहिश्त नसीब करे इसही तरह २२ बाईस वर्ष तक जिल्ले हिफाजत व हिमायतको अपनी रिआया× पर मुहीतरखा× रफीकोंके साथ हमेशा वफादारी× और मुहिमाते सलतनतमें कूवत व जोर आजमाई करके कामयाब हुए। मशहूर शाहे जहांने भी अपने ३२ बत्तीस वर्षके मुतवररिक अहद×में रहम वा सखावतका उमदा ईजरा और दवामी नेकनामी× हांसिल करनेमें कमी न की। आपके बुजुर्गोंकी ऐसी पुरखैर व फैयाज आदतें थीं इन फराख और उलू हिम्मतीके उसूल पर अमल करनेसे जिस तरफ उन्होंने अजीमित की फतह व नुसरत पेशरौ हुई, और इसी जरियेसे उन्होंने अकसर मुमालिक व किलआतको मगलूब व मुतीय किया मगर हुजूरके अहदमें अकसर मुमालिक सलतनतसें जाते रहे हैं और इस वजहसे कि तबाही व मुसीबत बिला मुजाहमत आलमगीर है× दिगर मुमालिकका नुकसान और आयद होगा। आपकी

---

(१) अपनी रिआयापर मेहरबानीका साया रक्खा× (२) हमरायोंपर निगाह [मेहरबानी]× (३) उमदा जमानेमें× (४) हमेशाकी नेकनामी × (५) उदारचित्तता (६) चढ़ाई की और फतहयाब हुए× (७) ताबे (अधीन) (८) मुसीबत विना रोक टोक दुनिया भरमें फैल गई (इसके दूसरे मायने)के तबाही व मुसीबत खुद आलमगीरही है×।

रिआया पामाल होगई है और आपकी सल्तनतका हर एक मुल्क तबाह व मुफलिस होगया है । वैरानी जीयादह होती जाती है और आफतें बढ़ती जाती हैं । जिस हालतमें खुद बादशाह और शाहजादोंके घरको इफलासने जा घेरा तो अमीरोंका खुदा जाने क्या हाल होगा-[1]सिपाह नालाहै× [2]ताजिर मुस्तगीस हैं×मुसलमान शाकी हैं, हिन्दू तबाह हैं और कमबख्त मुसीबत जदह लोगोंके गिरोह [3]किनानेश बिनासे मोहताज हैं× दिन भर गम व गजबसे सिर पीटते हैं, जो बादशाह ऐसे आफत जदा लोगोंसे [4]खिराजे गरां×वसूल किया चाहे वो अपनी अंजमत व श्यान× को क्यौं कर कायम रख सकता है । इस जमानेमें [6]मशरकसे मगरब×तक मशहूर है कि हिन्दोस्तानका बादशाह बिचारे हिन्दू मजहबी लोगोंसे तासुब करके ब्राह्मण, सेवड़ा, जोगी वैरागी और संन्यासियोंसे खिराज वसूल किया चाहता है और नशलें तैमूरियांके अजीमुशशान रुतबेका मतलक लिहाज न करके बेगुनाह बेकस खुदा परस्तोंपर अपनी ताकतका इमातहान करनेपर उतर आया, अगर हुजूरका कुछ भी एतकाद उन किताबोंपर है जिनको [7]मुतवर्रिक व मजहबी कहते हैं तो वे आपको रहनुमाई

---

(१) फौज रोती ह × (२) सोदागर नालशी हैं × (३) एक वक्त रातको भी रोटी नहीं मिलती× (४) भारी महसूल× (५) बडप्पन× (६) उदय अस्त× (७) प्रामाणिक (८) शिक्षा ।

करेंगी खुदावन्द ताला रब्बुल आलमीन है न सिरफ रब्बुल मुसल्मीन है हिन्दू और मुसल्मान एकसां उसकी मखलूख हैं रंगका फरक उसके हुकमसे है वोही सबको पैदा करता है आपके [1]मोविदोंमें उसीके नामपर अजान दीजाती है और बुतखानोंमें भी जहां घण्टे हिलाये जाते हैं मजमें इबादत वोही हैं। गैर लोगोंके मजहब या रसमियातकी इहानत करना खुदावन्द तालाकी मरजीसे खिलाफ वरजी है क्योंकि अगर हम तस्बीरको मिटावें तो लाजिम है कि मुरिदे इताब मुतसविर हों किसी शाइरने सच कहा है कि खुदावन्द तालाके मुखतलिफ कामोंपर एतराज व नुकता चीनी की [3]मुंवादरत मत करो—अल गरज महसूल जो आप हुनूदसे तलब करते हैं खिलाफे मौंदलातहै, और उसही कदर खिलाफे मसलहत है, क्योंकि मुल्क उससे मुफलिस होजावेगा अलावा बरी यह फैल जदीद और कवानीने हिन्दोस्तानसे खिलाफ है। अगर आपके जोशे मजहबीने आपको इस इरादे पर कतई आमादाह कर दिया है तो बमुकत जाये इनसाफ लाजिम है कि अव्वल रांमसिंहसे जो हुनूदमें मुकद्दम समझा जाता जाता है मतालिबा किया जावे और बाद अंजां इस खैरतलबको फरमाया जावे क्योंकि

---

(१) मसजिदोंमें (२) मन्दिरोंमें (३) जी चलाना (४) इन्साफ (५) रामसिंहजी हाडा।

मेरे मुकाबिलेमें आपको कम मुशकिलात वाके होंगी वरना मोरे व भगस×को अजीयत पहुंचाना उलूं हिम्मती और दरया दिली×से बईद है—तआज्जुब है कि बुजराय सलतनतने हुजूरको इमान व इज्जतके कवाइदकी हिदायत करनेमें बडी गफलतकी है।

ये महाराणा साहब जैसे वीर और नीतिज्ञ थे, वैसे ही गुणग्राही और कवि भी थे। इनकी कविताशक्ति और कविजनप्रियता इस निम्नलिखित छप्पयसे प्रकट होती है, जो कि उनका स्वयं बनाया हुआ है और राजनगरमें राजमहलकी पालपर उनहींके बनाए एक महलके गोखेमें खुदा हुआहै।

छप्पय (१८८)

कहां राम, कहां [1]लषण,
नाम रहिया रामायण।
कहां कृष्ण बलदेव,
प्रगट भागोत पुरायण॥
वालमीक शुक व्यास,
कथा कविता न करंता।
कुण सरूप सेवता ध्यान,
मन कवण धरंता॥

(१) चींटी और मक्खी× (२) बडप्पन व गम्भीरता×।

जग अमर नाम चाहो जिके,
सुणो सजीवण अक्खरां।
राजसी कहै जगराणरो,
पूजो पाँव कवेसरां॥

टी०–राम और लक्ष्मण कहां हैं रामायणमें उनका नाम रह गया है। कृष्ण बलदेव कहां, वे केवल भागवत पुराणसे प्रकट हैं। यदि वाल्मीकि, शुक और व्यास कथा तथा कविता न करते तो कौन राम कृष्ण आदिके स्वरूपकी सेवा करता और कौन ध्यान धरता। यदि संसारमें अमर नाम चाहते हो तो सजीवन अक्षर सुनो, राणा जगतसिंहका बेटा राजसिंह कहता है कि कवीश्वरोंके पैर पूजो॥

महाराणा श्रीजयसिंहजी। (दूसरे)

महाराणा जयसिंहजी वि० सं १७३७ में गादी विराजे। ये महाराणा अच्छे वीर और शान्तचित्त हुए हैं, इन महाराणासे बादशाह औरंगजेबके साथ सन्धि होगई थी जिसमें चित्तोड़, पुर, मांडल, बदनोर और मांडलगढ ये पांचों परगने महाराणाजीको वापस मिले, इन महाराणाने 'जय समुद्र' नामक एक बहुत बडा तालाव बनवाया जिसे ढेबरकी झील भी कहते हैं। यह तालाव हिन्दुस्थानकी कृत्रिम झीलोंमें सबसे बड़ा माना जाना है। इन महाराणाका देहान्त वि० सं० १७५५ में हुआ था।

गीत (१८९)

ऊव्यो दिली हूं ओरंगसाह अेक राह तणैं अंटै
महाबाह बिहूं राहां मेटबा म्रजाद ॥
धकां धकां चहूं चकां हूचकां षड़ग्ग धारा,
बीर हक्कां हींदवां तुरक्कां भिड़े बाद ॥
अेकंकार करेबानूं दिली भरत्तार आयो,
तुंजीहां अठारटंकी आवद्धियां तोण ॥
राण सारं धार पाण छत्रीकार राषे ध्रम्म,
हींदूकार न दै तेण अेकोकार होण॥२॥
पढावे कुराणां तिकां पढावै काजियां पूजा,
सुराणां पुराणां धेन ब्रहंमाणां सेव ॥
राजा तणो छत्रधारी षागधारी राजहंस,
दाणवांसूं बेधकारी अवत्तारी देव ॥३॥
रुड़ावो नीसाण सदा जीतरा जैसीह राण,
राषियो केत्राण पाण ईंदवाण राह ॥
आछा आछा रायजादां साहजादां किया आगैं,
पाछा पाछा पगां होय भाग छूटो पातसाह॥४॥

टी०—हिन्दू और यवनोंका १ एक धर्म करनेके २ अर्थ दिल्लीसे महाबाहु औरंगजेब बादशाह हिन्दू और यवनोंके

दोनों धर्मोंकी जुदी जुदी मर्यादाके तोड़नेको इच्छा करके चला, तब चारों ४ ओर ५ युद्ध करनेके अर्थ तरवारें निकलीं और हिन्दू तथा यवन वीरोंकी बीरहाक बढने लगी ॥ १ ॥ दिल्लीका पति ७ अठारह टांककी ६ कमान हाथमें लेकर दोनों धर्मोंको एक करनेको आया तो इधरसे महाराणाने ८ तरवारकी धाराके बलसे क्षत्रियधर्म रखकर हिन्दूधर्मको मुसलमानी धर्ममें शामिल नहीं होने दिया ॥ २ ॥ जो काजी कुरान पढाते थे उनको महाराणाने देवता, पुराण, धेनु (गौ) और ब्राह्मणोंकी सेवा करना सिखलाया जिससे ऐसा ज्ञात हुआ मानों किसी देवताने दानवरूपी यवनोंका ९ क्षय करनेक हेतु खड्ग और छत्रको धारण करनेवाले राजसिंहके पुत्रके रूपमें जन्म लिया है ॥ ३ ॥ हे महाराणा जयसिंह ! आप सदा विजयके नगारे बजवाइये किं जिननें अपने खड्गबलसे हिन्दू धर्मकी रक्षा की और जिस बादशाहने अच्छे अच्छे राजा और शाहजादोंको आपके सन्मुख युद्धमें आगे किया था वह बादशाह ही पीछे पैर देकर युद्धसे भाग छूटा ॥ ४ ॥

महाराणा श्रीअमरसिंहजी (दूसरे)

महाराणा दूसरे अमरसिंहजी वि. सं. १७५५ में गद्दी बिराजे । इनके राज्यसमयमें औरंगजेबके पुत्र बादशाह बहादुरशाहने आमेर और जोधपुर दोनो खालसा कर लिये थे, तब उक्त दोनों राजा सहायता लेनेको 'उदयपुर' आये । और

इन महाराणाने महाराजा जयसिंहजीको अपनी पोती और अजीतसिंहजीको अपनी बहिन इस शर्तपर व्याह दी कि उदयपुरका भानजा छोटा होने पर भी गद्दीका अधिकारी होगा । इसके बाद दोनोंको सहायता देकर आमेर और जोधपुरसे बादशाही खालसा उठवा दिया । ये महाराणा वि. सं. १७६७ में परलोकवासी हुए ।

महाराणा श्रीसंग्रामसिंहजी (दूसरे)

महाराणा संग्रामसिंहजी वि. सं १७६७ में गद्दी विराजे । ये महाराणा बहुत बुद्धिमान् और दूरदर्शी थे और बहुत न्यायकारी तथा उदारचित्त थे । इनके समयमें दिल्लीकी बादशाहत तो नष्ट होनेपर आगई थी और मरहठोंका उपद्रव प्रारंभ होगया था । परन्तु इनने मरहठोंसे बराबर मुकाबिला किया और उनकी अधीनता स्वीकार करना नहीं चाहा । इनका देहान्त वि. सं. १७९० में हुआ ॥

गीत(१९०)

ग्रहां हेक राजा सिधां हेक राजा अगँज,
सिरै नव अग्यारह राज साजा ॥
सूर शिव दोय राजा फबै राण सम,
राण सम तीसरो नको राजा ॥ १ ॥

प्रहारै तिमर विष नजर छाकां पियै,
घूमरां सत्रां षग धजर घावै ॥
दिवाकर अजर सगराम सम सुर दुहूं,
अवर छत्रधर नको नजर आवै ॥ २ ॥
जहरधर सुनर निरजर नगर जोवतां,
बहर तप हेक दिल गहर बीजो ॥
बंबहर सूर गुर अमर तण बेषतां,
तुलै नह बराबर भूप तीजो ॥ ३ ॥
तिहूं लोकां महीं जोड़ सांगा तणी,
हेक रवि दुवो जटधर अरोड़ो ॥
निलज नवरोज मेल्है तिके नारियां,
जिके छत्र धारियां किसो जोड़ो॥ ४ ॥

[कविया शाखाके चारण कविराजा करणीदानजी कृत]

टी०--एक ग्रहोंमें राजा है और दूसरा सिद्धोंमें राजा है जिनमें एक तो नवोंमें श्रेष्ठ सूर्य है और दूसरा ग्यारहमें श्रेष्ठ शिव है ये दो:ही राजा राणाके समान फबते (शोभते) हैं और तीसरा कोई राजा इनके सदृश नहीं है ॥ १ ॥ सूर्य तो संसारके अन्धकारको नाश करता है और शिवनें असह्य विष पी लिया है । इसी तरहं महाराणा संग्रामसिंह भी खड्गसे शत्रुओंका नाश करता है अतः अन्य छत्रधारी संग्रामसिंहके

बराबर नहीं दीखते ॥ २ ॥ देवताओंके पुर (स्वर्ग) में देखनेसे भी तेरे योग्य दो ही दीख पड़ते हैं। उनमें एक तो तपके कारण और दूसरा चित्तकी गंभीरताके कारण प्रसिद्ध है अतः अमरसिंहके पुत्र संग्रामसिंहको देखते तीसरा राजा कोई ऐसा दृष्टि नहीं पड़ता ॥ ३ ॥ तीनोंही लोकोंमें संग्रामसिंहकी बराबरी करनेवाला एक तो सूर्य है और दूसरा जटाधारी महादेव ही है। और जिन निर्लज्ज राजाओंने अपनी राणियोंको नवरोजे भेज दीं, उनका सादृश्य इनके साथ क्यौंकर होवै अर्थात् वे इनके बराबर नहीं हो सकते ॥ ४ ॥

गीत (१९१)

बैसंतै पाट सँगराम महाबल़,
चहुवां कूंटां क्रीत चवी ॥
कुंजर पाय बांधिया केवी,
कुंभाथल़ चाढिया कवी ॥ १ ॥
मँडतै तिलक राण मेवाड़ा,
सझिया भला मैंगलां साज ॥
बाँधा षीझ रीझ बैठाया,
रिम कदमां होदां कवराज ॥ २ ॥
अमर समो भ्रम जगड़ अभनमा,
बणवै नषत तषत बडवार ॥

बिहुंवै थोक हाथियां बणिया,
　　अर लंगर जसकर असवार ॥ ३ ॥
गुर गहलोत आवतै गादी,
　　छलियो समँद हींदवां छात ॥
दुरदांतणैं फब्या आदू ये,
　　पावां प्रसण कलावां पात ॥ ४ ॥
बढियो सदा सिँघासण बणतां,
　　रोस रीझ सिंधुरां सिरै ॥
पड़िया षल नेसास करै पग,
　　कव चढिया आसीस करै ॥ ५ ॥

टीका—हे महाबल राणा संग्रामसिंह ! तैंनें पाट बैठतेही चारोंओर जस फैला दिया, शत्रुओंको हाथियोंके पैरोंसे बंधवा दिये और चारण कवियोंको उनके कुंभस्थलों पर आरूढ किये ॥ १ ॥ हे मेवाड़के राणा ! तेरा राजतिलक होते ही तैंनें हाथियोंका साज अद्भुत रीतिसे सजाया कि खिज कर शत्रुओंको तो हाथियोंके पैरोंमें बांध दिये और रीझ कर कविराजोंको हौदोंपर बैठादिये ॥ २ ॥ हे महाराणा अमर सिंहजीके सदृश अनम्र भावसे विराजमान महाराणा ! तेरे राजतिलकके मुहूर्तसे शुभ नक्षत्रका और मेवाड़का गौरव बढ गया जिससे दोनों ही थोक हाथियोंमें अच्छे बने अर्थात्

शत्रुगण तो हाथियोंके लंगरसे बंधे और चारण गण हाथियोंपर सवार हुए ॥ ३ ॥ हे हिन्दुओंके छत्र श्रेष्ठ गुहिलोत! तेरे गद्दी बैठते ही समुद्र सीमासे उझल गया और राज्य शासनके प्रथम समयमें ही हाथियोंमें ये दोनों शोभित हुए, अर्थात् शत्रु तो पांवोंमें और सुकवि चारण कलावों पर ॥ ४ ॥ सिंहासन बैठते ही महाराणाका रोष और रीझ बढे। शत्रुगण तो हाथियोंके पैरोंमें बंधे हुए निःश्वास लेने लगे और कविजन हौदों पर चढ कर आशीर्वाद देने लगे ॥ ५ ॥

गीत(१९२)

अजर धोम गोळां गजर सार कैमर उडै,
ऊमडै समर तूटै बळां आव ॥
तठै सगराम अमरेस तण ताहरा,
पग हुवै मेर गिर हाथ पँषराव ॥ १ ॥
धरा ठहराण ऊडाण असहां धड़ा,
अभँग ऊडाण अवसाण अगराज ॥
हुवां घमसाण घूमाण थारा हुवै,
रांण पोयण गिरँद पाण षगराज ॥२॥
सुजड़ अधकाव जड़ कुरड़ परवाह सक,
दूठ ऊमरड़ सत्रां होम देहा ॥

उरड़ घमँचाल़ होतां बणै आपरा,
　　अनड़ पैराज तस गुरड़ येहा ॥ ३ ॥
नवां बर तजै बर आंट जाणैं नगां,
　　आंट नवबंस कर जाण ओल़ै ॥
अछर उलटी मुड़ै मेर भव ईषतां,
　　भुजँग पटकै जटी तमस भोल़ै ॥ ४ ॥

['कविया' शाखाके चारण कविराजा करणीदानजीकृत]

टी०–हे महाराणा अमरसिंहके वंशवाले संग्रामसिंह ! जब असह्य धुंआं आकाशमें छाजाती है, गोलोंका गजर होता है, तलवार तथा तीर उडने लगते हैं और शत्रुओंके शिर टूटने लगते हैं उस समय हे राणा ! तुम्हारे पैर सुमेरु पर्वतकी भांति अडिग हो जाते हैं और हाथ गरुड़ बन जाते हैं अर्थात् गरुड़के सदृश वेगको धारण करके शत्रुओंपर प्रहार करते हैं ॥ १ ॥ हे खुम्माणके वंशवाले ! युद्ध होनेपर तेरे पैर सुमेरु पर्वत और हाथ पक्षिराज (गरुड़) रूप होजाते हैं ॥ २ ॥ शत्रुओंकी २ पीठपर बहुत १ भाले लगाकर उनके शरीरोंको होम डाला और वह भयंकर ३ युद्ध होते समय आपके चरण तो पर्वत और हाथ गरुड़रूप होजाते हैं ॥ ३ ॥ पर्वतकी आंट धारण करनेवाले तेरे पैरोंको देख कर अप्सराएं नवीन पतियोंको छोडती हैं और तेरे हाथोंके कारण शिव सर्पोंको दूर

करते हैं (इसही अर्थका स्पष्ट करके उत्तरार्द्धमें कहा है) महाराणाके पैरोंको सुमेरुके समान अडिग जानकर अप्सराएं पीछे फिर जाती हैं और हाथोंको तार्क्ष्य (गरुड़) के रूपमें देखकर शिव सर्पोंको छोड़ते हैं कि वह कहीं खा न जाय॥४॥

महाराणा श्रीजगतसिंहजी (दूसरे)

ये महाराणा वि० सं० १७९० में गद्दी बिराजे और जयपुरके महाराजा जयसिंहजीके देहान्त होने बाद महाराज माधवसिंहजीको जयपुरकी गद्दी दिलानेके अर्थ चोसठ लाख रुपये हुलकरको दे करके उसको जयपुरके महाराजा ईश्वरी सिंहजी पर चढालाये। और कई लड़ाइयां करके अपने भानजे माधवसिंहजीको हिस्सा दिवाया। इनका देहान्त वि० सं० १८०८ में हुआ॥

महाराणा श्रीप्रतापसिंहजी (दूसरे)

ये महाराणा वि० सं० १८०८ में गद्दी बिराजे और तीन ही वर्ष राज्य करके वि० सं० १८१० में परलोक सिधारे॥

महाराणा श्रीराजसिंहजी (दूसरे)

उक्त महाराणा वि० सं० १८१० में गद्दी बिराजे। इनके शासनकालमें मरहठोंनें सात चढाइयां कीं इससे मेवाड़को बहुत नुकसान उठाना पड़ा। इनका देहान्त वि० सं० १८१७ में हुआ था॥

महाराणा श्रीअरिसिंहजी (तीसरे)

ये महाराणा वि० सं० १८१७ में गद्दी बैठे इनके समयमें फरेबी राणा रत्नसिंहका फितूर खड़ा होजानेके कारण मेवाड़के अधिकांश उमराव महाराणासे पलट कर सिंधियाको चढ़ालाये जिसका प्रथम (अव्वल) मुकाबला उज्जैन में हुआ, जिसमें 'सलूंबर' के बालक रावतजी पहाड़सिंहजी और 'शाहपुरा' के राजा उम्मैदसिंहजी बड़ी बीरतासे लड़ कर काम आये इन सलूंबर रावतजीके लिये ऐसा प्रसिद्ध है कि युद्धमें चलते समय शाहपुराके राजा उम्मेद् सिंहजीने इनको रोका कि आप बालक हैं अतः घरपर ही रहैं इसपर रावतजीने जवाब दिया कि मैं बालक हूं परन्तु मेरी 'सलूंबर' बालक नहीं है । अन्तमें युद्धमें बडी बहादुरीसे काम आये । जिसके पीछे दूसरा युद्ध सिंधियासे उदयपुरमें हुआ जिसमें फौज खरच देने पर सन्धि होगई, इन महाराणा अड़सी जीको बुंदीके रावराजा अजित सिंहजीने छलघातसे वि० सं० १८२९ में मार डाला ॥

दोहा (१९३)

अड़सीसूं अड़िया जिके, पड़िया करै पुकार ॥
म्हापुरसांरी मूंडक्यां, गिलगी गांव गँगार॥१॥

[नोट—रत्नसिंहजीकी सहायक होकर नागोंकी सेना आई थी जिसे गंगारके मुकाम पर सबसे पहले स्वयं महाराणाने घोड़ा उठाकर काटडाली इस विषयका यह दोहा है]

टी०–जिन महापुरुषों (नागों) ने अरिसिंहजीसे युद्ध किया वे पड़े २ पुकार करने लग गये औ उनके सिर शृंगार नामक पुरी खागई (निगलगई) ॥ १ ॥

गीत (१९४) मरसिया

भुजां धारियो न षाग तैं बाकारियो न बाघ भूरो,
करग्गां प्रहारियो दगासूं आणे कूंत ॥
अेका अेक लाषां बातां हारियो धरम्म अजा,
हींदूनाथ मारियो बिसास घात हूंत ॥ १ ॥
रूकां घाय जातो तोनें इळारा बदंता राव,
दीठ आय जातो जे नगारो चाड़ देत ॥
तठै भेद लड़स्सी दगारो पाय जातो तो तो,
षाय जातो अड़स्सी जगारो चोड़ै षेत ॥ २ ॥
षेळा चंडी नचातो ओ मचातो सूरमां षागां,
घणा जाडा थंडांनूं रचातो घेर घेर ॥
हाकले राणासूं साम्हैं चाळतो जै पूंदी हाडा,
बूंदी आडाबळा सूधी राळतो बषेर ॥ ३ ॥
कपट्टी भेषरै मतै चोहाण पोमायो कासूं.
बणायो इसो ही तंत लेषरै ब्रह्माण ॥

गोपाल ज्यूं अवस्साण देषैरै जिहान गायो,
पायो श्री दीवाण अंत लेषैरै प्रमाण ॥ ४ ॥

[भादा शाखाके चारण जीवाजीकृत]

टीका—हे अजितसिंह ! तैनें भुजोंपर खड्ग नहीं उठाया और न राणारूपी सिंहको ललकारा, केवल हाथमें भाला लेकर अपने धर्मको हारकर लाखोंही बातें अकेले ही हिंदूपतिको विश्वासघात करके धोखेसे मारलिया ॥ १ ॥ यदि तू उसे ललकार तरवारसे मारता तो संसारके लोग तुझे निःसन्देह वीर कहते यदि तू चौड़ेमें नगारा घुराकर दृष्टि आता तो वीर कहलाता, और जो तेरे छलसे लड़नेका भेद उसे मालूम पड़ जाता तो जगतसिंहका पुत्र अरिसिंह तुझे चौड़े खेत खा जाता ॥ २ ॥ यदि तू महाराणाको सामने आकर दकालता तो वह कई शूरोंको प्रसन्न कर देता और युद्धमें कालीको नचाता और बडी बडी सेनाको घेर घेर कर रचाता और हे कायर हाडे ! तेरी बुंदीको 'आडाबला' पर्वत सहित बिखेर डालता ॥ ३ ॥ हे चहुवाण ! तैनें कपटी बन कर कौनसी बात पर इतना घमंड किया, यह तो ब्रह्माने अन्तमें ऐसा ही लेख लिखा था सो देख ! संसारने भी यही कहा कि महाराणा अरिसिंहने भी श्रीकृष्णकी तरहं अवसान समय पाया अर्थात् जैसे श्रीकृष्णने व्याधके हाथसे मृत्यु पाई वैसीही महाराणाकी भी मृत्यु हुई ॥ ४ ॥

महाराणा श्रीहमीरसिंहजी (दूसरे)

उक्त महाराणा बहुत छोटी उमरमें वि. सं. १८२९ में गद्दी बिराजे। इनके राज्य समयमें मेवाड़की सेनाके सिंधी सिपाहियोंनें बहुत उपद्रव मचाया और सरदार भी सब पलट रहे थे अतः सरदारों और सेनाको पलटा देखकर सिंधियोंने मेवाड़को बहुत लूटा इन महाराणाका देहान्त वि. सं. १८३४ में हुआ था।

महाराणा श्रीभीमसिंहजी।

ये महाराणा विक्रमी संवत् १८३४ में गद्दी बिराजे। इनके शासनकालमें भी मेवाड़में सरदारोंका विप्लव बना ही रहा और इधर हुल्कर और सिंधियाने मोका देखकर देशको लूटना प्रारम्भ किया। तब गवर्नमेंटने राज्योंको अपनी रक्षामें लेनेके लिये कहला भेजा जिसको महाराणाने स्वीकार कर लिया। इस पर मेवाड़में प्रथम पोलिटिकेल अफसर कर्नल जेम्स टाडका शुभागमन हुआ इन्होंने सरदारोंका महाराणासे पीछा मेल कराया। इन महाराणाका देहान्त विक्रमी संवत् १८८५ में हुआ, ये महाराणा बहुत बडे वदान्य (उदार) थे॥

दोहा (१९५)

राणै भीम न रक्खियो, दत बिन दीहाड़ोह।
हय गयंद देतो हथां, मुवो न मेवाड़ोह॥ १॥

टीका—महाराणा भीमसिंहने कोई दिन भी दान बिना नहीं रक्खा अर्थात् प्रतिदिन दान करता रहा । अपने हाथोंसे जो हाथी घोड़े देताथा वह मरा नहीं है किन्तु अब भी यश-स्वरूपमें प्रकाशमान है ।

महाराणा श्रीजवानसिंहजी ।

महाराणा श्रीभीमसिंहजीके ९५ पुत्र पुत्रियोंमेंसे उनके देहान्त समय केवल जवानसिंहजी ही विद्यमान रहे थे जो वि. सं. १८८५ में गद्दी बैठे, और वि. सं. १८९५ में इनका देहान्त हुआ ॥

महाराणा श्रीसरदारसिंहजी ।

ये महाराणा बागोरसे आकर वि. सं. १८९५ में गद्दी बैठे । इनके समयमें गवर्नमेण्टने मेवाड़में 'भीलकोर' नामक सेना नियत की इनका देहान्त विक्रमी संवत् १८९९ में हुआ था ॥

महाराणा श्रीस्वरूपसिंहजी ।

ये महाराणाभी बागोरसे आकर वि. सं. १८९९ में गादी बैठे । इन्होंनें मेवाड़के राज्यमें कुछ कानून बनाये जो अबतक काममें लाये जाते हैं । इन्होंने प्रजाका शासन बहुत उत्तम किया था और मेवाड़ पर जो कर्ज होगया था वह सब उतार कर खजानेमें भी रुपये जमा किये । इनको विक्रमी संवत् १९०७ में पक्षाघात होगया था और इनका देहान्त वि. सं. १९१८ में हुआ था ॥

पुस्तक छप जानेपर महाराणा श्रीजवानसिंहजीके वर्णनका एक गीत मिला (जो उनका स्वर्गवास होनेपर किसी सुकविने कहा था) वह यह है-

गीत।

भूलै नह सहर मुलक नह भूलै,
पँडित न भूलै पाणा।
भड़ कव पासवान किम भूलै,
रूंष न भूलै राणा ॥ १ ॥

उदियापुर गोषां अनदाता,
निरव्रतपणो न धारो।
करबा सहल भूप हेकरसां,
पाछा महल पधारो ॥ २ ॥

भाला हथां जोध भीमाणी,
बाल्हा सुरपुरबासी।
पांत बिराज बिलाला पातां,
प्याला मद कुण पासी ॥ ३ ॥

सत आचार अथग रा सहजां,
षग रा षळां षवाना।

मन मोहण थिर चर षग मृगरा,
जगरा मुकट जवाना ॥ ४ ॥
दीवाळी होळी दसरावै,
गौरि लहूर गवाड़ा ।
असवारी थारी कद आसी,
मिणधारी मेवाड़ा ॥ ५ ॥
षेलण फाग षास षिलबतियां,
सूरां रमण सिकारां ।
अेक बार षडवै कर आजो,
तीजां तणा तिवाँरां ॥ ६ ॥
कर पिँडदान गया सिर कीधो,
सो परलोक सुधारो ।
महाराणा ओछी ऊमरमें,
जीत गयो जमवारो ॥ ७ ॥
बाणारसी असी बरणां बिच,
फजर सिवालय फिरतां ।
वा छिव बले नजर कद आसी,
कासी दरसण करतां ॥ ८ ॥

खिंतामणरूपी चीतोड़ा,
पारिस कलव्रछ पातां ।
पाछी खबर किणी नह पाई,
जबर पयाणै जातां ॥ ९ ॥
भूरा बाघ किसै मिस भूलां,
आवै निस दिन याद अमाप ।
फूटै हियो आंतरै फिरतां,
बडी मुहम करतां मा बाप ॥ १० ॥

टी०–हे महाराणा ! सब नगर और देश तथा पण्डित लोग तेरे हाथोंको नहीं भूलते, भड़ (योद्धा) कवि और पास रहनेवाले तो किस प्रकार भूलैं परन्तु वृक्ष भी तुझे सर्वदा स्मृतिपथसे पृथक् नहीं करते ॥ १ ॥ हे अन्नदाता ! उदयपुरसे सर्वथा निवृत्त मत हो और विनोद करनेके लिये हे राजन् ! एक बार पीछेही महल पधारो ॥ २ ॥ भाला हाथमें रखनेवाले योद्धाओंको भय देनेवाले, स्वर्गवासियोंके वल्लभ, सबमें विराजमान उदार महाराणा ! अब चारणोंको मद्यके प्याले कौन पावेगा ॥ ३ ॥ हे सदाचार और सुशीलके आश्रयदाता, खड्गसे खलोंको नाश करनेवाले और स्थावर जंगम व पशु पक्षियोंके मनको मोहित करनेवाले, जगत्‌के मुकुट महाराणा जवानसिंह ! तू कैसे भूला जाय ॥ ४ ॥ दीवाली होली और दसरावेको गौरीजनोंसे लहूर ('लहूर' मारवाडमें एक प्रकारके गीतोंकी संज्ञा है) गवानेवाले हे मणिधारी मेवाड़पती

तेरी सवारी कब आवैगी ॥ ५ ॥ निकट रहनेवाले अन्तरङ्ग जनोंसे फाग खेलनेवाले और आखेटमें विनोद करनेवाले महाराणा ! तीजोंके तिंवार (उत्सव जो कि श्रावण शुक्ला तृतीयाको होताहै) को एक बार परिकर बनाकर पधारो॥६॥ हे महाराणा ! तैंने गयामें अपने हाथसे पिण्डदान करके पर-लोक सुधार लिया और थोडीही अवस्थामें जमवारा (जन्म) जीत लिया अर्थात् परलोक और यह लोक दोनों सुधार कर तैंने जीवन सफल कर लिया ॥ ७ ॥ असी और बरणा नदीके बीचमें विराजमान बाणारसी पुरीमें प्रातःकाल शिवमन्दिरोंमें भ्रमण करते २ काशीपुरीमें कभी तेरी वह उत्तम छवि भी दृष्टिमें आवेगी ॥ ८ ॥ चारणोंके लिये चिन्तामणिरूपी और पारस तथा कल्पवृक्षरूपी हे चीतोड़ा तेरे महाप्रस्थानमें जाने पर किसीने भी तेरी पीछी खबर नहीं पाई ॥ ९ ॥ हे बाघ ! किस मिससे तुझे भूलैं रात दिन तेरी अमाप (अथाह) स्मृति आतीहै । हे मा बाप ! तेरे महायात्राके पथिक होनेपर पीछे फिरतें हमारा हृदय विदीर्ण होता है ॥ १० ॥

गीत (१९६)

करन जेम हेम भूदेव अभरी किया,
चीत रजपूत बट मुठठ चाहे ॥
राण सारूप रहियो जितै राषियो,
मारबो तारबो हात मांहे ॥ १ ॥
भूपती अमर रहियो रचे भींतड़ां,
हाथियां दियो दत आप हाथे ॥
तणैं सादल़ कियो राज चत्रगढ जितै,
सीह अजिया पियो नीर साथे ॥ २ ॥
देष फरंगाण हिंदवाण थंभ दियो छो,
कियो छो विधाता ऊंच काजां ॥
थेट इनसाफरी घड़ी सावत थकां,
रंकरी पड़ी आतंक राजां ॥ ३ ॥
जोम रह बोल रहिया जुगां जावतां,
सत्रां अणभावतां दीघ त्रासा ॥
नागद्रह कायरो बचन कहियो नहीं,
समटियो बायरो जितै सासा ॥ ४ ॥

[दधिवाडिया शाखाके चारण कमजी कृत]

टी०—कर्णकी तरहं स्वर्ण देकर जिसने ब्राह्मणोंको तृप्त कर दिये, और चित्तमें क्षत्रियत्वका घमंड सदा बनाये रक्खा वह महाराणा स्वरूपसिंह जबतक जीता रहा तबतक उसने मारना और तारना हाथमें ही रक्खा ॥ १ ॥ उस राजाने कई मकानात बनवाये और अपने हाथसे हाथियोंका दान दिया। इस सरदारसिंहके पुत्रने जबतक चित्तोड़के राज्यका शासन किया तबतक सिंह और बकरीको एक घाट पर साथ पानी पिलाया ॥ २ ॥ विधाताने उसको उग्र कार्य करनेको उत्पन्न किया था अतः जबतक उसने न्याय किया तबतक गरीबोंकी आतंक राजाओं पर पड़ती थी ॥ ३ ॥ हे महाराणा! जबतक आप विद्यमान रहे तबतक सदा वीरताके वचन ही बोलते रहे और शत्रुओंको नहीं रुचनेपर भी आपने उनको त्रास ही दिया, और जबतक श्वास चलता रहा तबतक मुंहसे कायर वचन कभी नहीं कहा ॥ ४ ॥

महाराणा श्रीशंभुसिंहजी।

ये महाराणा भी बागोरसे आकर विक्रम संवत् १९१८ में गद्दी बिराजे। और बहुत उत्तमतासे राज्यशासन किया। इनका देहान्त विक्रम संवत् १९३१ में हुआ ॥

महाराणा श्रीसज्जनसिंहजी।

ये महाराणा 'सोन्याणा' ग्रामसे आकर विक्रमी संवत् १९३१ में गद्दी बिराजे। और विक्रम संवत् १९४१ में परलोक सिधारे ॥

गुसाँई गणेशपुरीजीके बनाए हुए काव्य।

कवित्त (१९७-१९८)

दैसिक सुदैसिक सुधारै दोऊ लोकनकों,
दोऊ ना सुधारै ताहि दैसिक न मानूं मैं।
अम्मृत वही है जो कि मृतक जिवावै द्रुत,
मृत ना जिवावै ताहि अमृत न मानूं मैं॥
रसायन वो ही जो रसायन जराकों हरै,
जरा ना हरै ताहि रसायन न मानूं मैं।
सज्जनकों सज्जन जो मानै सु ही सज्जन है,
सज्जन न मानै ताहि सज्जन न मानूं मैं॥१॥

टीका-जो विद्वान् पुरुष दैशिक और सुदैशिक दोनों लोकोंको सुधारै वह ही दैशिक है, और जो दोनोंही लोक सुधारनेका ध्यान नहीं रखता उसको मैं दैशिक नहीं मानता। अमृत उसे ही कहना चाहिये जो द्रुत अर्थात् शीघ्रही मृतक (मरा हुआ) को जिलादेवे, और जिसके सम्बन्ध होनेपर मृतक पुनः जीवित नहीं हो उसको मैं अमृत नहीं जानता। मेरे विचारसे रसायन (चमत्कारी औषध) वह ही है जो रसायन अर्थात् रसोंके विकृत होजानेसे उत्पन्न होनेवाली जरा (शिथिलता) को हटावे, किन्तु जो जराको ही नहीं दूर करसकता उसको रसायन कैसे कहा जाय। ऐसे ही जो

मनुष्य सज्जनको अर्थात् दयादाक्षिण्यादि उत्तम गुणोंके आश्रय पुरुषको सज्जन (भला) ही मानताहै अर्थात् कदाचित् भी श्रेष्ठ पुरुषके सुचरितको कलङ्कित करना नहीं चाहता किन्तु उसे गुणशाली जान कर प्रेमपूर्वक उसकी प्रशंसा करता है वह ही सच्चा सज्जन है, और जो सज्जनको सज्जन नहीं मानता प्रत्युत (बल्के) उसके सद्गुणोंको दम्भ (कपट) मोह (अज्ञान) आदि बताकर दूषित करता है उस को मैं सज्जन (सत्-जन) अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष नहीं मानता किन्तु ऐसे कुचाली मनुष्यको मैं अबोध जानताहूं । इसी प्रकार महाराणा सज्जनसिंहको भी जो सज्जन नहीं मानता उसे भी मैं सज्जन नहीं कहता । अभिप्राय यह है कि महाराणा सज्जनसिंह अपने सद्गुणोंके कारण सच मुच सज्जन ही हैं ॥ १ ॥

दोहा ।

दसरथ निस चुक्किय दुरद,
उत पुनि लिन्निय आह ।
सज्जन निस कुस लच्छ हनि,
सबतैं लिन्न सराह ॥ २ ॥

[नोट-महाराणा सज्जनसिंहजीने रात्रिको एक छोटा निशाना उडाया, उस समय गुसाईजीने यह दोहा सुनाया था जिसमें दशरथके साथ महाराणाका व्यतिरेक (उत्कर्ष) कहा है]

टी०-राजा दशरथ रात्रिको शब्दवेध करनेके प्रसंगमें दुरद् अर्थात् हाथीका निशाना भी चूक गये और इधर सुयोग्य पुत्र श्रवणके अन्धे और अनाथ माता पिताका शाप लिया। परन्तु महाराणा सज्जनसिंहनें निशामें छोटे निशानेको मारकर सबसे प्रशंसा पाई अर्थात् महाराणाका लक्ष्य-वेधका अभ्यास प्रौढ और प्रशंसनीय है ॥ २ ॥

सवैया (१९९)

रावरो दान मुरार भनै जग,
वन्दित है कवि कीरति गाई।
मैं हूं अजाचक भूप जोधानको,
वीनती माफीकी यातैं कराई ॥
सज्जन मो अपराध न लेखिये,
देखिये रावरे वंस बडाई ॥
धर्म निबाहनको हिंदवानको,
रान रहे तनत्रान सदाई ॥

[कविराजा मुरारिदान "आशिया" महामहोपाध्याय रचित]

[नोट-कविराजा मुरारिदानजी प्रथम बार उदयपुर गये तब महाराणा सज्जनसिंहजीने विदाके समय उनको 'लाख-पसाव' देना चाहा उस समय कविराजजीने यह सवैया सुना-कर माफी चाही जिस पर महाराणा साहब उक्त दान देनेसे रुक गये]

टीका-मुरारिदान कहता है कि आपका दान जगत्‌में वन्दना करने योग्य है जिसकी कि कवियोंने कीर्ति गाई है । परन्तु मैं जोधपुरके राजाओंका अयाचक (जोधपुरके अतिरिक्त दूसरे राजाओंसे दान न लेनेवाला) हूं इस लिये दान लेनेके लिये मुआफीकी बिनती कराई है । हे महाराणा सज्जनसिंह! आप मेरे अपराधकी ओर ध्यान न दें किन्तु आपके वंशके गौरवपर विचार करें । हिन्दुओंके धर्मकी रक्षा करनेके लिये महाराणा सदाही तनुत्रान (कवच) रहे हैं अर्थात् अपने शरीरपर आघात सहकर आर्योंके धर्मको रक्खा है ॥

कवित्त-मरसिया (२००)

गुनी गन गुनि गुन गोर गहि बांधे ग्रन्थि,
विरुद विचार वीर ओगुन विसरगो।
विज्ञनतैं प्रीति कर विज्ञनकी वृत्ति वर,
विज्ञनको दुःख हर भूरि सुख भरगो॥
धवल धुरीन धीर धीर धुर धार धार,
स्कंधावार भार फतमाल कंध धरगो।
गुजर करौं हौं जो लौं ऊमर गुजर जैहै,
उजर हो जापै वोह गाहक गुजरगो॥३॥

[गुसाईं गणेशपुरीजीकृत]

टीका-जो वीर विद्वज्जनोंके गुणोंको भले प्रकार जांच

कर गुणोंकी गांठ बांध लेता, और विरुद अर्थात् प्रशंसा विचार कर अपगुणोंको भूल जाता था (भाव यह है कि जो सर्वदा गुणग्राही था और दोष पर ध्यान नहीं देताथा). जो महाराणा विद्वानोंकी श्रेष्ठ वृत्तिमें अर्थात् सर्वदा सदाचरणमें तत्पर रहता था, अत एव विद्वानोंसे प्रीति करता था, क्यौं कि 'समान शीलव्यसनेषु सख्यम्' अर्थात् बराबरवालोंमें परस्पर प्रीति होती है। हा! चतुर पुरुषोंके दुःखोंको हरण कर उन्हें यथेष्ट सुख देनेवाला गया। हा! धीर पुरुषोंकी उज्ज्वल धुरको धारण करनेवाला धरा (पृथ्वी) का धुरंधर अर्थात् धीर और वीर महाराणा राज्यशासनके भारको फतहसिंहके कंधेपर धर कर स्वयं स्वर्गको सिधारा। हा!!! मैं योंही (अनास्थासे) गुजर करताहूं जबतक कि उमर गुजर जाय क्यौंकि जिस पर सर्व प्रकारसे उज्र था वह गुणग्राहक आज भूमण्डल पर नहीं है ॥ १ ॥

बारहठ कृष्णसिंह सोदरचित–

कवित्त मनहर (२०१–२०२ तक)

सज्जन सिधायो स्वर्ग मेदपाट मौली मनि,
छायो अन्धकार छिति कवि कविताईको।
कहैं कवि कृष्ण मेरो जीवन आधार हुँतो,
पुण्य पारावार हुँतो भारत भलाईको ॥

कालके कुबात पारिजातको अपक फल,
गिरिगो सो जान्यौ हेतु क्षत्रिलघुताईको ॥
करिगो असार जग भरिगो सुयश भूरि,
परिगो शिखर हाहा नीति निपुनाईको॥१॥

टीका–मेवाडका मौलिमणि महाराणा सज्जनसिंह स्वर्गको सिधार गया । आज कवि और कविताईका अन्धकार छागया । कवि कृष्णसिंह कहता है कि महाराणा मेरे जीवनका आधार था अर्थात् सर्वतो भावसे पालन करने वाला स्वामी था । और भारतवर्ष (हिन्दोस्तान) की भलाईका पवित्र समुद्र था । हा ! कालरूपी यवनके प्रचण्ड वेगमें आकर कल्पवृक्षका फल अपकही गिर गया सो क्षत्रियोंकी लघुताका कारण जाना जाताहै । हा ! महाराणा जगत्को असार करगया । अपने व्यापक सुयशसे संसारको पूर्ण कर गया । हा ! हा ! आज राजनीतिका निपुणताका शिखर तूट पडा ॥

करोलीके हेत लरयौ रक्षक हरोली बनि,
राजनको मौलिमनि उत्तम उजारो हो ॥
जामके कुजाम जामनेरतैं निकारि तहां,
शुद्ध क्षत्रि थापनके जापन करारो हो ॥
सबहीकी ढाल शत्रुसाल ह्वै सदैव रह्यो,

ब्रिटिस अनन्य मित्र प्रीति प्रतिपारो हो ॥
सोची नाहिं हाहा विधि सज्जन बुलातें स्वर्ग,
अज्जनकी अज्जताको कौन रखवारो हो ॥२॥

टीका–हा ! जो महाराणा करोलीके लिये हरोली बनकर रक्षक हुआ। और जो राजाओंका मौलिमणि व उत्तम प्रकाश करनेवाला था। जिस महाराणाने जामनगरमें यवन राजा होनेके अवसरपर गवर्नमेंटसे वहां क्षत्रिय राजा होनेका अनुरोध किया। और स्वजातिके साथ सहानुभूति प्रकट की और जो सदा ढालरूप होकर सबकी रक्षामें जागरूक था और शत्रुओंके हृदयमें सालता था। उस गुणशाली महाराणा सज्जनसिंहको स्वर्ग बुलाते समय हे विधातः! तैनें इतना भी विचार नहीं किया कि अब आर्योंके आर्यधर्मका रक्षक कौन है ॥ २ ॥

महाराजाधिराज हिन्दूपति 'रविकुलकमलदिवाकर'

वर्तमान महाराणा श्री १०८

श्रीफतह सिंहजी बहादुर

जी० सी० एस० आई०।

वर्तमान महाराणा साहब विक्रम सं० १९४१ में मेवाड़के राज्य सिंहासनपर विराजे। ये महाराणा साहब जैसा राज्य शासन कर रहे हैं सो सबपर विदित है।

सवैया (२०३)

छोरि किते पतनी अपनी मन,
रामजनी मुखके अभिलाखे ।
मत्त किते मदिरा मद ह्वै,
बस नींद कितेक लखे रित भाखे ॥
धर्मरता जगके करता,
रसना निज भूपनके गुण भाखे ।
सत्य दया समता रु सुशील,
फता नृप ये चहुं आपही राखे ॥ १ ॥

[फतहकरण 'उज्ज्वल' कृत]

टी०—कितने ही राजा लोग अपनी धर्मपत्नियोंको छोड़कर वेश्याओंके मुखकी शोभापर लुभा गये। कितने ही राजा मदिराके मदसे मत्त हुए रहते हैं । और कितनेही निद्राके वश होकर समय विताते हैं यह बात मैं सत्य कहताहूं । हे स्वधर्म परायण महाराणा फतहसिंह ! जगत्के कर्ताने निज रसनासे अर्थात् वेदरूपी वाणीसे राजाओंके जो गुण आज्ञा किये उनमें विशेषकर सत्य, दया, समता (सब पर एकसा भाव रखना) और सुशील इन चारों गुणोंको आपहीने आश्रय दिया है ॥१॥

दोहा (२०४)

घणी रीझ थोड़ो घमँड, चित सध सरली चाल ।
दीन सहायक काछ दृढ, महाराण फतमाल॥२॥

[फतहकरण 'उज्ज्वल' कृत]

टींका–महाराणा फतहसिंहकी रीझ बहुत है । घमंड थोड़ा है। चित्त श्रुद्ध है। और व्यवहार सरल है। ये महाराणा दीन दुखियाओंकी सहायता करते हैं। और काछके दृढ अर्थात् जितेन्द्रिय हैं ॥ २ ॥

कवित्त (२०५)

जाहरी करोल करैं अङ्क हत्थे बब्बरकी,
ठाहरी सुनेतैं रान थिरता रचै नहीं।
थाहरी घिराय काढ लागनी लगावैं तोक,
खा हरी गुरांट पैंड एकहू खचै नहीं॥
हाहरी अवाज छोड़ आहरी करन लागै,
ताहरी करै तीको कोड उपमा जचै नहीं।
बाहरी गऊके फतहसिंह तूप धारैं जब,
ना हरी करै तो नार नाहरी बचै नहीं ॥१॥

[मोडसिंह 'मैंयारिया' कृत]

[नोट–इस कवित्तमें वर्तमान महाराणा साहबका सिंहकी शिकार करनेका वर्णन है]

टीका–जब करोल (शिकारी) नोहत्थे बवरी नाहरकी खबर देते हैं, तो महाराणा सिंहका पता पातेही थोड़ा भी बिलंब नहीं करते और थाहरी घिराकर लागनी अर्थात् निशाना नहीं चूकनेवाली तोक लगाते हैं जिससे सिंह तत्काल गुरांट

खाकर पड़जाता है। एक पैंड भी नहीं उठा सकता। वह हाड़की आवाज अर्थात् दकाल करना छोड़कर विह्वल हो आह भरने लगता है। इस कर्तव्यकी कोई उपमा नहीं प्रतीत होती। गौंके बाहरी अर्थात् गोरक्षाके लिये सन्नद्ध महाराणा फतहसिंह तूप धारे उस समय जो हरी अर्थात् विष्णु भगवान भी गा करैं तो नाहरैं नहीं बच सकता॥

कवित्त मनोहर (२०६)

मात पितु भाव कारि चारन विचारते न,
जानि पूजनीक हित क्षत्रीहू धरत को।
छूटि जातो नातो वो सनातनको सैजहीमें,
लोक लाज लीह लोप डरतैं डरत को॥
सूकि जातो सिन्धु यह पात पाठशालारूपी,
काव्य खट अंग गंग धारतैं भरत को।
धरतो न पाट फतमाल मेदपाटको तो,
सज्जनकी मनसाकों पूरन करत को॥

[बारठ कृष्णसिंह 'सोदा' कृत]

[नोट—यह कवित्त चारण पाठशालाको दूसरी बार खोलते समय बारहठ कृष्णसिंहजीने महाराणा साहबको सुनाया था]

टी०—चारण लोग क्षत्रियोंको माता पिताके भावसे नहीं विचारते और कौन क्षत्रिय इनको पूजनीय जानकर हित करता। वह सनातनका सबन्ध सहजही छूटजाता। और लोकमें लज्जा (मर्यादा) का लोप करनेसे कौन डरता ? अर्थात् सबही लाजका लोप कर डालते। यह चारण पाठशाला रूपी सिन्धु भी सूख जाता और काव्य और छै शास्त्र और व्याकरणादि छहों अंगोंको गङ्गाकी धारासे कोन भरता। अहो विद्यानुरागी वीर महाराणा फतहसिंह मेवाड़के पाटपर नहीं विराजते तो महाराणा सज्जनसिंहजीकी मनसाको कौन पूर्ण करता अर्थात् वर्तमान महाराणा साहबने "चारणपाठशाला" को फिरसे खोलकर भूतपूर्व महाराणाके मनोरथको पूर्ण कियाहै॥

कवित्त (२०७)

वीर दृढ निग्रह वदान्य राजनीति विज्ञ,
वंस अध्वगामी सत्यसंध सुद्ध मत्ताको।
'अज्जकुल कमल दिनेश' पद यथायोग्य,
वेद धर्म रच्छक निवाहनीक नत्ताको॥
नित्य जस निगादि अनित्य गनै पुद्गलकों,
सस्त्रविद्या सफल सराहनीय सत्ताको।

मेदपाट भूषन प्रमान्यौ गुनरत्ता पेखि,
जान्यौ हम फत्ता है नमूना रान पत्ताको ॥१॥

[बारहठ बालाबक्स 'पालावत' कृत]

टीका–महाराणा फतहसिंह वीर और दृढ विग्रह (युद्धमें) स्थिर अथवा विग्रह अर्थात् शरीरसे दृढ–बलशाली हैं । वदान्य अर्थात् उदार हैं और राजनीतिमें निपुण हैं । अपनी वंशपरिपाटी पर चलते हैं । प्रतिज्ञाको निवाहते हैं और इनका अन्तः करण निर्मल है । वेदके धर्मकी रक्षा करनेको सन्नद्ध (कटिबद्ध) हैं । और नत्ता अर्थात् संबन्धको निभाने वाले हैं । इन महाराणामें " आर्यकुलकमलदिवाकर " यह विशेषण यथार्थ फबता है । ये महाराणा जसको नित्य (अविनाशी) मानते हैं और पुद्गल अर्थात् शरीरको अनित्य (नाशवान्) जानते हैं । शस्त्रविद्यामें इनकी सत्ता (अभ्यास) सफल है अत एव प्रशंसनीय है । सो मेवाड़के भूषणके असाधारण गुण देखकर हम ऐसे अनुमान करते हैं कि महाराणा फतहसिंह महाराणा श्रीप्रतापसिंहका नमूनाहै अर्थात् उन्हींके सदृश विरुदावली योग्य हैं ॥

दोहा (२०८)

धर्म मतानैं चित धर्यौ, गिण प्रभुताने संग ।
अवल पतानै ज्यौं अबै, राण फतानै रंग ॥२॥

[बारहठ बालाबक्स 'पालावत' कृत]

टी०–मेवाड़की प्रभुता पाकर महाराणाने धर्मके मतेको (सनातन धर्मके सिद्धान्तको) अंतःकरणसे स्वीकार कियाहै अर्थात् धर्मको अव्याहत रखकर उत्तम प्रणालीसे राज्यशासन कररहे हैं इसलिये पहले जिस प्रकार महाराणा प्रतापसिंहको रंग था वैसे ही अब महाराणा फतहसिंहको रंग है॥

सवैया (२०९)

सत्र समस्तमें वाही सजावट,
मैनत है मजबूत मताको।
टेढी जगां चढिबेमें टटोर लो,
थाकै नहीं फिरता फिरताको॥
सिकारके नाम पहाड़ मझार,
निहारै सुठोर सो नेह नताको।
जथारथ जान जपै जुगता यह,
रान फता अवतार पताको॥

[चारण युक्तिदान 'देथा' कृत]

टीका–शस्त्र धारण करनेका वह ही प्रकारहै अतुल परिश्रमी है और अपने प्रशंसनीय सिद्धान्तपर दृढ है। और टेढी जगहं अर्थात् पर्वतोंके विषम स्थानोंमें भ्रमण करनेकी ओर देखो तो फिरते २ कभी थकते ही नहीं। सिकारका नाम सुनते ही पहाड़में जापहुंचते हैं। उत्तम पुरुषोंसे स्नेह करते हैं और

प्रीतिका सम्बन्ध यथावत् निभाते हैं । इस कारण सारा जगत् यथार्थ जानकर कहता है कि महाराणा फतहसिंह महाराणा श्रीप्रतापसिंहका अवतार है क्योंकि उन सरीखे असाधारण गुणोंका इनमें पूर्णतया अनुभव होता है ॥

दोहा (२१०)

लखन कुंभ सांगे पतै,
जवन जोर दिय तोड़ ।
तेहिं रविकुल चिर थिर फता,
सब हिन्दु न नृपमोड़ ॥

[रामनाथ 'रतनू' कृत]

टीका—महाराणा गढलक्ष्मणसिंह, महाराणा कुंभा, महाराणा संग्रामसिंह और महाराणा प्रतापसिंहने यवनोंका मान मर्दन कर उनके प्रभुत्वको तोड़ जिस वंशका गौरव बढाया । उस पूजनीय सूर्यवंशमें हे सब हिन्दुओंके राजशिरोमणि महाराणा फतहसिंह ! चिरकालतक मेवाड़का शासन करते रहो ॥

दोहा (२११)

बुद्धि समप्पण गजवदन, गुणद विधारण गाथ ।
सिद्धि करण असरण सरण, नमो नमो गणनाथ ॥

[बारहठजी बालावक्सजी 'पालावत' कृत]

दोहा(२१२)

अलिक इन्दु कुञ्जर तुचा, मुण्डमाल वपु छार ।
अहि भूषण विजियाभखी, जय जय जय त्रिपुरार ॥

[गोपालदानजी 'कविया' कृत]

इति शुभम् ।



मेवाड़के प्रसिद्ध १६ उमरावोंकी गणना।

त्रिहुं झाला त्रिहुं पूरव्या, चौंडावत भड च्यार।
दुय सगता दुय राठपड़, सांरंगदेव पँवार ॥
सरणायत्तां "सादडी,"[1] "गोघूंदो"[2] घर गल्ल।
दुरग "देलवांडो"[3] दुरस, झाला खत्रवट झल्ल॥२॥
'कोठारचो'[4] अर 'वेदलो,'[5] 'पालसोल़'[6] भुजपाण।
मांझी धर मेवाडमें, चितबंका चहुवाण ॥ ३॥
दिपै 'सलूंबर'[7] देवगढ,'[8] 'बेघूं'[9] थान विचार।
अधपतियां 'आंमेट'[10] ऐ, चौंडा सरणा च्यार॥ ४॥
इक 'भींडर'[11] दुय 'वांनसी,'[12] महिबिच सगतां मोड़।
'घांणेरो'[13] 'बदनोर'[14] घर, राणधरा राठौड ॥५॥
'कानोडह'[15] आपण करां, सरणों सारंगद्योत।
ज्यौं पँवार 'बीझोलियां,[16] बेहूं सरणा जोत ॥६॥

शुद्धिपत्र ।

पृष्ठसं.	पङ्क्तिसंख्या.	अशुद्ध.	शुद्ध.
३	१९	प्राप्त है	प्राप्त हुई है ।
४	१७	क्षत्रियां	षत्रियां ।
९	१	गाजें	गांजे ।
,,	११	भाभी	भामी ।
१२	१२	झूड़ी	झड़ी ।
१३	३	कीधों	कीधो
१४	१७	धायन	घायन
१७	७	हमीरसिंहजी	श्रीहमीरसिंहजी ।
२०	११	सुरंपतरी	सुरपतरी ।
२१	१६	याद	यदि ।
२४	२	बयणा	बयणां ।
,,	१८	खेताजी	श्रीखेताजी ।
२८	९	वोहलों	बोहलों ।
३१	१	पीछ	पीछे ।
३३	२१	छत्रपत्र	छत्रपत ।
३९	१३	चूंक	चूक
४०	६	बल़वंत	बल़वँत ।
,,	१४	वडे गढ २	बडे २ गढ ।
४९	२	रायमल़	रायमल ।
,,	९	हूवे[१०]	वे[१०] हूं
४६	६	डंड	डँड ।

पृष्ठसं.	पङ्क्तिसंख्या.	अशुद्ध.	शुद्ध.
४७	१८	कूभाहरै	कूंभाहरै ।
४९	१४	गंह	गह ।
५०	१२	६	५ ।
५९	१७	हमी	हमीर ।
६०	९	कव्या	कव्यां ।
६१	७	वरिवर	वीरवर ।
६३	२	नें	ने ।
६६	७	मजीत	मसीत ।
६८	१	दूेवा	देवां ।
७२	१०-१२		है ।
"	१२	उसा	उसी ।
"	"	दाखता	दीखता ।
७४	२१	उदयसिंहजी	श्रीउदयसिंहजी ।
७८	५	उधोर	ऊधोर ।
८२	२०	जाछे	त्राछे ।
८४	४	पाप	पाय ।
"	५	सुदतार	अदतार ।
८५	१३	तणौं	तणैं ।
८६	१२	पकरि	फकीर ।
९२	१७	बाजंती	बाेजंती ।
१०६	४	कसामद	कुसामद ।
"	७	दुसरा	दुरसा ।
"	१३	राणा उत	राणाउत ।
१०८	१७	काट पणधर	काढ, पणधर ।

पृष्ठसं.	पङ्क्तिसंख्या.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१०८	२०	वाला	वाले।
१०९	४	वंशवाला	वंशवाले।
१११	१३	करै	करैं।
११३	१३	(वीच)	बीच।
११५	१८	सुःख और दुख	सुख और दुःख।
"	२०	जासीं सूरमा	जासी सूरमां।
११६	१०	पांतरियो	पांतरिये।
"	१९	लिये हुए	किये हुए।
"	२२	साथें	साथे।
११८	४	चिँतार	चितार
११९	१	विरुद्ध छिहत्तरी	विरुदछिहत्तरी।
"	७	नमो	नमे।
"	१३	काना	कानां।
१२०	१	रहै	रहे।
१२१	१७	राज राणा	राजा राणा।
१२२	१०	जो बादण	ज्यूं बादल़।
१२३	७	मजीत	मसीत।
१२५	१	जो राणा	राणा? जो आप।
"	११	निराझियो	निरझरियो।
१२७	१८	टोटी	टोपी।
१२८	१४	पेल	पेले।
१३१	२	बैरसे	बेरसे।
"	१९	स्त्रियां	स्त्रियां।
१३३	१३	मच्डलग्गनतैं	मण्डलगानतैं।

पृष्ठसं.	पङ्क्तिसंख्या.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१३४	४	इकल–जिहं	इकल–जिहँ ।
,,	१९	गढालोंको	गजढालोंक
१३९	१८	तैरे–बहमण्डको	तेरे–ब्रहमण्डकों ।
१३३	१८	पूजकर	पूजगर ।
१४४	१९	दक्षिण्य	दाक्षिण्य ।
१४९	८	कूरमा	कूरमां ।
१९४	१२	रैसिया	रीसिया ।
१५७	२	घण	घणा ।
,,	३	घणी	धणी ।
,,	१६	अहाड़के	आहाड़ोंके ।
१५९	२२	ह्वीलोल़	हालोच ।
१६०	४	बारूं	वारू ।
,,	६	सारूं	सारू ।
१६३	६	षैगां	षगां ।
,,	७	वेलै	वैलै ।
,,	११	रार्णे पर हस	राणै पर हँस ।
१६४	६	वरवरताहै	बरघराताहै ।
१६९	८	आंघणै	आंगणै ।
१६९	१२	संहारिया	सँहारिया ।
१७०	२	महाराणा राज- सिंह बनाव	महाराणासाहब रा- जसिंह बनाम ।
,,	४	वोद	वाद ।
,,	१०	दामा	दाना ।
,,	१९	वे इत्तफाक	व इत्तफाक ।

पृष्ठसं.	पङ्क्तिसंख्या.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१७१	१७	शुकरिमें	शुकरियेमें।
१७४	९	मतसविर हा	मुतसविर हो।
”	१६	आमादाह	आमादा।
”	१९	खैरतलबको फ-मीया	खैरतलबको याद फर्माया।
१७७	१५	ईंदवाण	हींदवाण।
”	१७	पाछा पाछा	पाछा।
१८१	११	सँगराम	सँग्राम।
”	१७	षीझ	षीज।
१८३	१२	बळां	षळां
”	१६	ऊडाण	आपाण।
”	२०	ऊमरड़	उमरड।
१८४	३	नवां	नवा।
”	६	तमस	तगस
१८७	५	त	तैं।
”	१०	चाड़	चौड़ै।
१९१	२	जेम हेम	जेम दे हेम।
”	१९	दीव	दीध।
१९२	१२	वरिता	वीरता।
”	१३	जबंतक	जबतक।
१९६	१७	जोलौं	यौंही।
”	१८	वोह	वह।
१९७	३	गूणग्राही	गुणग्राही।
”	१५	सोद	सोदा।

पृष्ठसं.	पङ्क्तिसंख्या.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१९८	१०	यवनके	पवनके ।
२००	२	अपनी मन,	अपनी, मन ।
"	२०	सध सरली	सुध सरली ।
२०१	११	तीको कोड	तो कोउ ।
२०२	५	धार	धारैं ।
"	६	नाहरैं	नाहर ।
२०३	१३	निग्रह	विग्रह ।
२०४	१९	प्रभुताने	प्रभुतानै ।
२०६	८	तेंहिं	तिहँ ।
२०८	७	पाल सोल़	पाल़सोलि ।



कुछ सूचनाएं।

(१) वहुत जगहँ 'ड़' के स्थानमें ड और 'तरह' का तरहं रह गया है तथा 'ळ' का ल वा 'ल' का ळ भी होगया है सो विद्वज्जन सुधार लेवें।

(२) पृष्ठ ५२ में जो सादड़ी वालोंके विषयमें उल्लेख किया गयाहै उसकेलिये ऐसा भी निश्चय हुआ है कि वह वृत्तान्त महाराणा श्रीप्रतापसिंहजीके साथ जो हलदी घाट पर युद्ध हुआ उस समय झाला मानसिंहजीने जो अप्रतिम स्वामिभक्तिका परिचय दिया उस समयका है।

(३) पृष्ठ ७१ में जो नोट है उसकेलिये यह भी सुना-गया है कि उल्लिखित गीत बारहट जमणाजीने उदयपुर पधारनेपर महाराणा साहबको सुनाया था।

(४) पृष्ठ ७७ में महाराणा श्रीप्रतापसिंहजीके लिये जो 'जिन्होंने अपने धर्मकी रक्षाके अर्थ राज्य भी खोदिया' यह वाक्य लिखा है इससे अभिप्राय यह है कि, महाराणा साहबने राज्यसुखको तुच्छ समझा और उसके अधीन नहीं हुए।

(५) पृष्ठ ८४ में जो 'मह लागो पाप' इत्यादि गीत है उसके लिये जनश्रुति ऐसी है कि वह गीत सुप्रसिद्ध विद्वान् और ईश्वरभक्त बारहट ईसरदासजीने महाराणा साहबको सुनाया था।

(६) पृष्ठ १५६ में महाराणा जगत्सिंहजीके दानवर्णनका [illegible] ठीक होना नोटमें लिखा गयाहै उसका बहुत अन्वे-[illegible] गया परन्तु वह अबतक उपलब्ध नहीं हो सका।

इति

महाराणायशप्रकाश-शुद्धिपत्र

समाप्त।

3·00